RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 47 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 1 मई 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

बहुत सुन्दर : युवाओं का हौंसला और हिम्मत

विश्व ट्रांसप्लांट खेलकूद में उत्तराखण्ड के हीरा और अभिनव का बेहतर प्रदर्शन

कार्यालय प्रतिनिधि

अभिनव ने बैडमिन्टन डबल में कांस्य जीता

आस्ट्रेलिया के पर्थ में वर्ल्ड ट्रांसप्लांट गेम्स में भारतीय की ओर गये 32 खिलाड़ियों में उत्तराखण्ड के हीरा दास्पा और अभिनव पांगती ने भागीदारी कर बेहतर प्रदर्शन किया और वर्तमान वातावरण में उन युवाओं को प्रोत्साहित किया है जो अंग प्रत्यारोपण के मामलों में घिरे हैं या इसे कमजोरी मानकर निराश होने लगते हैं। भारतीय खिलाड़ियों ने पर्थ में जोरदार प्रदर्शन करने के साथ ही अपने हौंसले और हिम्मत से साबित कर दिया है कि यदि इच्छा शक्ति हो तो जीवन सहज बनाया जा सकता है।

सीमान्त क्षेत्र के सेला गाँव के राजेन्द्र सिंह दास्पा के सुपुत्र हीरा और डीडीहाट के दुष्यन्त सिंह पांगती के सुपुत्र अभिनव ने पहले से ठान रखी थी वह भारत की ओर से खेल में प्रतिभाग कर युवाओं को सन्देश देंगे कि शरीर में किसी भी प्रकार की दिक्कत होने पर हार नहीं माननी है। इसके लिये इन्होंने काफी अभ्यास भी किया और भारतीय टीम का हिस्सा बनकर आस्ट्रेलिया के पर्थ में वर्ल्ड ट्रांसप्लांट गेम्स में भागीदारी की। खेल के पहले दिन ही भारत ने एक मैडल प्राप्त कर लिया था। मैच के अगले दिन अभिनव ने बैडमिन्टन डबल में कांस्य पदक जीतकर भारत का झण्डा लहराया।

ऑर्गन इण्डिया, द ऑर्गन रिसीविंग एण्ड गिविंग अवेयरनेस नेटवर्क (ऑर्गन), पाराशर फाउंडेशन की ओर से आस्ट्रेलिया के पर्थ में वर्ल्ड ट्रांसप्लांट गेम्स का आयोजन किया गया। 15 अप्रैल से 21 अप्रैल 2023 तक होने वाले इस आयोजन को लेकर भारत पहले से तैयार था। इसको लेकर दिल्ली में हुई प्रेस वर्ता में भारतीय दल के कप्तान करहुन नन्दा, बैडमिंटन खिलाड़ी और वर्ल्ड ट्रांसप्लांट गूम्स मेडलिस्ट बलवीर सिंह, धर्मेन्द्र सोती, बैडमिंटन खिलाड़ी और विश्व प्रत्यारोपण खेलों के पदक विजेता दिग्विजय सिंह गुजराल, स्क्वैश खिलाड़ी और विश्व प्रत्यारोपण खेलों के पदक विजेता उपस्थित थे। अर्जुन अवार्डी और राजीव गांधी खेल रत्न अवार्डी मेंटर, मानव रचना स्पोर्ट्स साइन्स सेन्टर के रंजन सोढी ने ट्रांसप्लांट खेल में जाने वाले खिलाड़ियों को बधाई दी।

बताते चलें कि ऑर्गन इण्डिया के दस साल पूरे होने का जश्न भी मनाया जा रहा है। इस संस्था की संस्थापक अनिका पराशन ने बताया कि ऑर्गन इण्डिया की स्थापना इसलिए की क्योंकि मेरी माँ दिवंगत कीर्ति पराशर को 2013 में हृदय प्रत्यारोपण की आवश्यकता थी। इस बार ऐसे 30 भारतीय एथलीटों ने पर्थ में भागीदारी की जो या तो अंग प्राप्त करने वाले हैं या स्वयं प्रत्यारोपण के लिये दानकर्ता हैं।

पराशर फाउंडेशन के संरक्षण में ओआरजीएन इण्डिया शुरु हुआ। आज यह भारत में अंग दान के मुद्दे पर काम करने वाले प्रमुख संगठनों में से एक बन चुका है और राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन के तत्वावधान में काम रने वाली अखिल भारतीय उपस्थिति भी है।

पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच की सम्पत्ति सुरक्षित रहे

नई कार्रकारिणी बनी खड़क सिंह बगड्वाल अध्यक्ष यूसी जोशी महासचिव

शिकायत मिलने पर रोक लगानी पड़ी थी

हल्द्वानी। आखिरकार पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच हीरानगर की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। पूर्व कार्यकारिणी की शिकायतें आने पर उसे भंग कर दिया गया था। संस्थापक अध्यक्ष बलवन्त सिंह चुफाल ने बैंक सम्बन्धी कार्यों पर भी प्रतिबन्ध भी लगाया। इसके बाद नई कार्यकारिणी का गठन करते हुए खड़क सिंह बगड्वाल को अध्यक्ष और यू.सी. जोशी को महासचिव बनाया गया है। हुकुम सिंह कुंवर को मंच का संरक्षक बनाया गया। इसके अलावा गोपाल सिंह बिष्ट उपाध्यक्ष, देवेन्द्र सिंह तोलिया सचिव, त्रिलोक बनोली कोषाध्यक्ष, कैलाश जोशी आय-व्यय निरीक्षक बनाए गए।

उल्लेखनीय है कि शहर की बड़ी संस्था पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मेंच दिसम्बर माह से लगातार विवाद में चल रही थी और कई तरह की शिकायतें मिलने के बाद संस्थापक अध्यक्ष श्री चुफाल ने कार्यकारिणी भंग कर दी। उत्थान मंच में गोलज्यू मन्दिर के पास ही शनि मन्दिर निर्माण के साथ ही लगातार विवाद बढ़ता रहा। कार्यकारिणी का क्या रवैया था उस पर सवाल उठने लगे थे। इसके अलावा साल भर कार्यकारिणी क्या करती रही और धन का व्यय किस प्रकार से कहाँ पर किया जा रहा था यह सारे सवाल जन चर्चा में थे। उत्थान मंच की सम्पत्ति का भविष्य क्या होगा इसको लेकर भी आम जनता चर्चा करती रही है। ऐसे में जरूरी हो गया था कि कोई कदम उठाया जाए। मंच की ओर से उठाए गये कदम के बाद विश्वास जगा है कि नई कार्यकारिणी इसकी सम्पत्ति को बचाए रखने के साथ ही मंच से जुड़े रहे पुराने लोगों को सम्मान देगी।उल्लेखनीय है कि पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच पर्वतीय एकता और यहाँ की संस्कृति के संरक्षण के लिये गठित पुरानी संस्था है। इसके संरक्षक और संस्थापक महासचिव के रूप में पिघलता हिमालय के सम्पादक स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती का योगदान याद किया जाता है। उस दौर में बहुत ही ईमानदारी से इस मंच को बनाया गया, इसका शुरुआती कार्यालय वर्षों तक पिघलता हिमालय का शक्ति प्रेस ही था। हीरानगर में सम्पत्ति जुड़ने के बाद से गतिविधियां बढ़ी लेकिन उच्छृंखलता बढ़ने लगी और विवाद भी।

'किताब कौतिक' की जरूरत क्यों पड़ी?

रतन सिंह किरमोलिया

हमारी वर्तमान 21 वीं सदी की शिक्षा व्यवस्था प्रणाली ने हमारी भावी पीढ़ी को भारी भरकम पाठ्यक्रम को परोसकर ऐसा उलझा कर रख दिया है कि उसका एक प्रकार से बाह्य जगत से सम्पर्क ही टूट गया है। बच्चों का थोड़ी उच्च शिक्षा की ओर पदार्पण शुरू क्या हो जाता है, उसकी पढ़ाई बस उच्च पैकेज प्राप्ति पर केन्द्रित हो जाती है। यही स्थिति बाद में माता पिता और समाज के प्रति उसकी सम्वेदनशीलता को कम कर देती है।

इस स्थिति में वह समाज, साहित्य, संस्कार, परम्पराओं और पम्परागत ज्ञान एवं सामाजिक सरोकारों वह कैसे रूबरू हो पाएगा। यह अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है।

अब हमारे सिस्टम में बच्चों को किताबों से जोड़ने के लिए 'किताब कौतिक' जैसे आयोजन करने की जरूरत पड़ रही है। जिसमें लाखों रुपए खर्च किए जा रहे हैं। जो भी है ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन बहुत अच्छी पहल है। यहाँ सावधानी यह बरती जाने की जरूरत है कि ऐसे आयोजनों और कार्यक्रमों का राजनीतिकरण न होने पाए । परन्तु शासन ऐसा करने को राजी नहीं और प्रशासन लाचार नजर आता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे आयोजनों में समाज के शुद्ध एवं रचनात्मकता के लिए समर्पित व्यक्तित्वों की भागीदारी ज्यादा सार्थक और महत्वपूर्ण होती है किन्तु हकीकत इसकी ठीक उलट नजर आ रही है। हमारे समाज की यही बहुत बड़ी विडम्बना है। इन हालात में नई पीढ़ी कितना कुछ सकारात्मक ग्रहण कर पाएगी? यह अत्यन्त चिन्तन मन्थन की विषयवस्तु है।

जो भी हो, 'किताब कौतिक' का विचार अति उत्तम है। सकारात्मक एवं क्रियात्मक सोच है। वर्तमान में किताबों से दूर होते जा रहे बच्चे किताबों के नजदीक आएंगे। किताबों को छूएंगे। पन्ने उलटेंगे। पलटेंगे। किताबों के कुछ शब्द, कुछ वाक्य और कुछ चित्र उनकी नजरों से होकर गुजरेंगे। वे इससे अवश्यमेव प्रेरित होंगे। जरूरत है घर, गाँव, स्कूल और कालेजों में पुस्तकालयों एवं वाचनालयों की विधिवत व्यवस्था हो। गाँव के बड़े, बूढ़े, जवान, बच्चे और स्त्री पुरुष सभी इन पुस्तकालयों एवं वाचनालयों के दीदार करें। पढ़ने की संस्कृति धीरे-धीरे विकसित होगी। ऐसा मेरा मानना है और विश्वास भी है।

यह काम घर से माता पिता, समाज में बड़े सयाने और स्कूल-कालेजों में शिक्षक इस दायित्व को एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के तौर पर निर्वहन करे तो बात बने। यह बहुत जरूरी है। घर में माता पिता, समाज में सामाजिक कार्यकर्ता, स्कूल-कालेजों में शिक्षकों की लापरवाही एवं इस ओर से ध्यान और चिन्तन हटने के कारण आज 'किताब कौतिक' जैसे आयोजनों की जरूरत आन पड़ी है।

इस परिप्रेक्ष्य में मैं एक मिसाल देना चाहूँगा। मैंने सन् 1973 में एक अध्यापक के रूप में शिक्षा विभाग में पदार्पण किया। चूंकि मेरी बचपन से ही साहित्यिक रुचि रही है। उस समय की स्थापित छपने वाली मासिक पत्रिका 'युवक' में (शेष पृष्ठ 2 पर)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

माननीयों के ठाट देखकर विचलन तो होना ही है

पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर उत्तराखण्ड में कर्मचारी सड़क पर उतर चुके हैं। कर्मचारियों ने सांविधानिक मार्च निकालने के साथ ही कहा कि जब माननीयों को पेंशन मिल रही है तो हमें क्यों नहीं? देहरादून से लेकर प्रदेश के हर कौने में जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ है और सभी जब पुरानी पेंशन लागू करने की बात कही गई है। साथ ही चेतावनी दी है कि यदि सुनवाई नहीं होती है तो चुनावों में इसका असर होगा।

आन्दोलनकारी ही नहीं अन्य लोग भी विधायक-मंत्री-सांसदों का उदाहरण बार-बार देते हैं। वेतन-भत्ते के अलावा तमाम ठाट जिस प्रकार से इनके दिखाई दे रहे हैं वह सब क्या है? जनता का प्रतिनिति बनते समय एकदम जमीन से उठने वाले कुछ ही दिनों में जितनी सम्पत्ति अर्जित कर लेते हैं वह सब क्या है? सारी बातों की खुसर-पुसर के साथ ही माननीयों के ठाट देखकर विचलन तो होना ही है। आंखिर सारी सुख-सुविधाएं पाने वाले उन लोगों के बारे में क्यों नहीं सोच पा रहे हैं जिनका साधन मात्र नौकरी बचा है। इसके अलावा जैसे-तैसे अपना गुजर-बसर कर रहे आम लोग किन हालातों में हैं। केवल मन की बात सुनाने और अपने सत्ता के लिये झपटमार से जनता का क्या होने वाला है।

शासन-सत्ता चाहे जिसकी हो, उन्हें देश की आम जनता को ध्यान में रखते हुए विचार करना चाहिये। जन प्रतिनिधि संयमी-त्याग-तपस्या वाले हों। कुर्सी मिलते ही गिरोहबाजी में लिप्त, अपने कारखाने व सम्पत्ति बढ़ाने वाले, इसके साथ ही जनप्रतिनिधि बनने का वेतन और बाद में पेंशन लेने वालों से कैसे उम्मीद की जा सकती है? यह सारे हालात आम जनता जानती है लेकिन मजबूर है और कमर्चरी आन्दोलन कर अपना गुस्सा दिखा रहे हैं।

क्षेत्रीय भाषाओं के नाम पर ढकोसला ज्यादा हो रहा है

क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने के लिये उत्तराखण्ड मुक्ति विश्वविद्यालय ने रुचि ली लेकिन विद्यार्थी इसमें रुचि नहीं ले रहे हैं। विवि ने कुमाउंनी, गढ़वाली और नेपाली भाषा का सार्टिफिकेट कोर्स शुरु किया है लेकिन दूरस्थ शिक्षा के इस केन्द्र में क्षेत्रीय भाषाओं को लेकर युवाओं ने अरुचि दिखाई है। इस सच्चाई को भी जान लेना चाहिये कि अपनी भाषा-संस्कृति के नाम पर उत्तराखण्ड में कुछ ज्यादा ही उधम मचने लगा है। अपनी संस्कृति से दूर छलबल करने वाले बेहद सक्रिय होकर घूम रहे हैं ताकि उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद कुछ हो न हो, इनके नाम पर पुरस्कारों को बटोरा जा सके। इस प्रकार की लग्गो-लिपटा के खेल में सिर्फ ढकोसला ही जो सकता है।

फसक

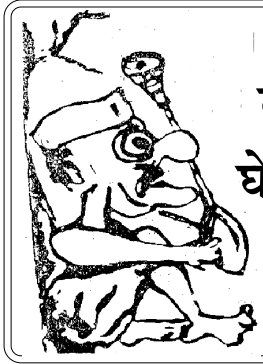

दाज्यू, दाल-रोटी के लिये घेराबाड़ी करना मजबूरी ठैरी

जब सोठे चलते हैं तब जाकर हकीकत पता चलती है बल

दाज्यू, काण्डा में अन्धाधुन्ध खड़िया खनन के बाद जमीन में दरारें आने से लोग डरे हुए हैं। कह रहे हैं- सरकार पर भरोसा है। हमें समझ नहीं आ रहा है कि खोद-खोद कर आन-आन बिक चुका है, ऐसे में सरकार क्या करेगी? इस खुदाई में कई बन चुके और कई तर चुके। जब सोठे चलते हैं तब जाकर हकीकत पता चलती है बल। हल्द्वानी के भाजपा के सम्भाग कार्यालय में पूर्व दर्जा मंत्री अनिल कपूर डब्बू और कार्यकर्ता गोविन्द सिंह टाकुली में भिड़न्त हो गई। दाज्यू, इस कार्यालय में बड़े-बड़े नेता आते हैं और अनुशासन का पाठ भी पढ़ाया जाता रहा है। फिर ऐसा क्या हुआ होगा कहा?

दर्जा मंत्री रहे डब्बू का कहना है- 'गोविन्द सिंह टाकुली भाजपा कार्यालय में कई सालों से आ रहा है। कई बार वह संदिग्ध गतिविधियां करता है। कभी 20 हजार तो कभी 25 हजार रुपये मांगता है, हम मदद कर देते हैं। फिर रुपये मांगने लगा तो उसका फोन उठाना बन्द कर दिया। अब उसने सोशल मीडिया पर अभद्र मैसेज किया। इसके बाद कार्यालय के बाहर मिल गया तो समझाने की कोशिश की लेकिन वह झगड़े पर उतर आया।' दाज्यू, क्या कहा जाए? डब्बू हो या टाकुली, दाल-रोटी के लिये घेराबाड़ी करनी मजबूरी ठैरी। पार्टियों के झण्डे बोकने वाले ज्यादातद उलझन में रहते हैं बल। मुखानी पेट्रोल पम्प में भी दबंगाई कर एक कर्मचारी को बेरहमी से दिनदहाड़े पिटाई का नजारा भीड़ ने देखा। कौन बोले? किससे बोले? कैसे बोले? जिसके कपाल में लट्ठ लिखे हैं कौन रोक सकता है। धूपबत्ती के पैकेट में चरस पैक कर सप्लाई करने वाले को हल्द्वानी पुलिस ने पकड़ लिया। दाल-रोटी के लिये कूड़े के ढेर में भी कूद रहे हैं। पेट की आग और शाहरुख-कैटरीना बनने की तमन्ना क्या न करवा दे।

महानगर रुद्रपुर में भी फोड़ाफोड़ हुई। ट्रांजिट कैम्प के पूर्व सभासद एवं कांग्रेस नेता दलीप अधिकारी पर हमला हो गया बल। कार्यकर्ता पुलिस से मामले पर मिले और कहा- 'महिला की झूठी तहरीर पर कार्रवाई हुई तो आन्दोलन होगा।' पुलिस भी क्या करे? वर्दी खाकी है तो काम भी करना ही हुआ। रुद्रपुर में सामिया इन्टरनेशनल के बिल्डर्स पर फर्जी रजिस्ट्री का आरोप के साथ ही इसके डायरेक्टर को गिरफ्तार कर लिया है। प्लाट दिखाकर उसकी फर्जी रजिस्ट्री की थी बल। पुलिस अब बिल्डर्स की ढंग से पड़ताल करेगी बल। इन्टरनेशनल नाम हुआ तो मामले भी बड़े-बड़े खुल सकते हैं। पुलिस ने एक ब्लैकमेलर अय्याश को भी गिरफ्तार कर लिया है। मुजफ्फरनगर का यह लौंडा फर्जी नाम-पता बदलकर सोशल मीडिया के द्वारा फंसाता था बल।

जी.बी.पन्त अभियान्त्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान घुड़दौड़ी, पौड़ी में दो छात्र गुटों के बीच मारपीट हुई। एक-दूसरे का धुस्सान करने के लिये बहुत देर तक लपकते रहे बल। बीटेक पढ़ाई वाले बच्चें पता नहीं क्या हो गया है इनको भी। अब मुकदमा झेल रहे हैं।

बहुत कठिन है पनघट की डगर। यूपी में माफिया अतीक और अशरफ की मौत के बाद से बयानबाजी खूब हो रही है। मार तमाशा करने वाले बदमाशों को प्रयागराज में मेडिकल परीक्षण के लिये ले जाते समय बाइक सवारों ने गोलियों से भून डाला था। दाज्यू, समय-समय की बात ठैरी। मोदी ज्यू कह रहे हैं- 'जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई हर घर से लड़ी जानी चाहिये।' जलवायु की चिन्ता कितने लोग कर रहे हैं? पूरा ध्यान रोकड़े पर है। हरिद्वार में दरोगा घूस लेते हुए पकड़ा गया है। रुड़की में भी पेशकार को विजिलेंस वालों ने घूसखोरी में पकड़ लिया। दाज्यू, जलवायु भी क्या करेगी दुनिया में जब सबकुछ मिलावट का चल रहा है। देहरादून व आसपास खाद्य सुरक्ष विभाग की छापेमारी में 400 किलो नकली पनीर पकड़ा गया। हम क्या खा रहे हैं, क्या ओढ़ रहे हैं, क्या कर रहे हैं कुछ पता नहीं। दाल-रोटी के लिये हर प्रकार से घेराबाड़ी हो रही है फिर चाहे असली हो या नकली।

दाज्यू, मौज मनाओ। मंत्री अब नौकरशाहों की एसीआर लिख सकेंगे। सतपाल महाराज बहुत दिनों से ऐसी इच्छा रख रहे थे। दाज्यू, होना तो क्या ही है। जिसकी जैसी चलेगी वैसी चलायेगा। कहने की बात हुई। दाल-रोटी के अलावा भी खेल-तमाशा होने वाला हुआ।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

किताब कौतिक की जरूरत क्यों.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

रचनाएं छपती रहती थी। सन् 1978 शुरू में कुछ मित्रों ने मथुरा से बच्चों के लिए बाल पत्रिका 'बाल पताका' मासिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया। शुरू-शुरू में मैं पचास प्रतियां अपनी तरफ से मंगवा कर बच्चों में नि:शुल्क वितरित कर दिया करता रहा। पत्रिका का मूल्य भी उस समय मात्र दस पैसा हुआ करता था। बाद में बच्चों ने अपनी जेब खर्च से पैसा बचा कर खुद की बचत से पत्रिका खरीदना प्रारम्भ कर दिया और अब डेढ़ सौ से अधिक पत्रिकाएं आने लगी थी। बच्चे इस पत्रिका को खरीदते थे। पढ़ते थे। इसके लिए रचनाएं लिखते भी थे और छपते भी थे।

1978 शुरू में ही कानपुर से डा. राष्ट्रबन्धु जी ने 'बाल साहित्य समीक्षा' मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। इसमें भी बच्चों की रचनाएं छपती रहती थी।

मेरे कहने का यह आशय है कि बच्चों को माहौल प्रदान किया जाए। वे पाठ्यक्रम की पुस्तकों के इतर पुस्तकें पढ़ेंगे भी। अन्दर का लेखक जागृत हो जाए तो लिखना भी शुरू कर सकते हैं। यह सिलसिला चलने लगेगा तो फिर पुस्तक मेलों का महत्व और अधिक बढ़ जाएगा। इस मामले में स्कूल कालेजों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है।

इसके लिए जरूरत है गाँव गाँव में पुस्तकालय और वाचनालय खोले जाने की। स्कूल-कालेजों के अधिकांश बन्द पड़े पुस्तकालयों एवं वाचनालयों को जीवित करने की। जहाँ पुस्तकालय और वाचनालय नहीं हैं वहाँ शुरुआत की जाए। समय समय पर 'किताब कौतिक' जैसे आयोजन स्थानीय विद्यालयों को करवाने चाहिए। प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता वहाँ पुस्तक प्रदर्शनी लगा सकते हैं। वृहद् स्तर पर न सही छोटे स्तर पर ऐसे आयोजन बखूबी करवाए जा सकते हैं। लेखकों को ऐसे आयोजनों में अपनी पुस्तकें सहर्ष भिजवानी चाहिए। इसके लिए सरकार चाहे तो आर्थिक मदद दे सकती है। जरूरत है सार्थक प्रयास और पहल करने की।

ओपीएस ओपीएस ओपीएस

बढ़ चले हैं पग पथ पर
जीतने ओपीएस की डगर
फिर लागू हो पेंशन पुरानी लिया कर्मचारी ने ठान
सेवानिवृत्ति के पश्चात, पेंशन ही सम्मान-जीवन प्राण।
सबको समता का अधिकार संविधान में वर्णित है
कैसे तब कोई पेंशन भोगी, कोई पेंशन से निवृत्त है?
पेंशन ही तो सरकारी सेवा का महत्तम चार्म है
एनपीएस धोखा सा है जो खतरे का अलार्म है।
कतिपय शपथ पाते ही पेंशन भोगी बन जाते हैं
कोई जीवन सेवा में घिस-घिस पेंशन से अछूते हैं
दैया रे दैया एक राष्ट्र में दो विधान?
सम सुविधा मिले सबको, कहता बाबा साहब का संविधान।
पूर्व में जब आर्थिक स्थिति राष्ट्र की थी कमजोर
तब तो पेंशन दी शासन ने उम्र भर भरपूर
अब विकसित होने की बात तो नित कह रहे
पर पेंशन को खर्चीला बता, दिन में तारे दिखा रहे।
मान्यवर बुढ़ापा भी सम्मान से जीना चाहता है
खुद की यथोचित आय से ही स्वाभिमान भी होता है
गर न रहेगा कुछ न आश रहेगी, सन्तानें भी तिरस्कृत कर देंगी
बोझ समझ रिटायर होते ही, वृद्धाश्रम में छोड़ आएंगी।
एक ही नारा अब, थॉट आफ सेक्सैस
बस, ओपीएस -ओपीएस -ओपीएस।

-एक पेंशन विहीन कर्मचारी की 'मन की बात'

दाज्यू, इस कलजुग में बहुत बबंडर मचा हुआ है। रुद्रपुर में जब एक बालिका लुटने-पिटने के कगार पर पहुँच गई तब जाकर मामला खुला।

भीम कुमार को अभूतपूर्व कार्यों के लिये डॉक्टरेट

बेरीनाग। सामाजिक कार्यकर्ता एवं समाजोत्थान समिति के चैयरमैन डॉ.भीम कुमार को कैलिफोर्निया पब्लिक यूनिवर्सिटी ने वर्षों से सामाजिक सेवा व शिक्षा के क्षेत्र में किये गये अभूतपूर्व कार्यों के लिये डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया है। दुनियाभर की सर्वश्रेष्ठ यूनिवर्सिटी में शामिल कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से सम्मानि होने पर क्षेत्र की जनता ने भीम कुमार को बधाई दी है। उल्लेखनीय है कि भीम कुमार पिछले तीस वर्षों से ग्रमीण इलाकों में निरन्तर सामाजिक सेवा और डॉ.भीतराव अम्बेडकर आदर्श स्कूलों के माध्यम से गरीब व असहास लोगों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने का काम कर रहे हैं। उनके इसी कार्य का मूल्यांकन करते हुए इस यूनिवर्सिटी ने समाजसेवी भीम कुमार को डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जानकारी

मोटा अनाज (मिलेट्स) को विश्व पटल पर पहचान मिल रही है

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

कोदा-झंगोरा खाएंगे, उत्तराखण्ड बनाएंगे, उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन के दौरान बच्चे से लेकर बूढ़ों तक की जुबां पर यह नारा आम था। लेकिन राज्य गठन के 22 वर्षों बाद प्रदेश में कोदा-झंगोरा मिलना किस कदर मुश्किल हो चला है, यह बात महिला और बाल विकास परियोजना से जुड़े विभिन्न समूहों से बेहतर और कौन जानता होगा। असल में शासन ने प्रदेश के आंगनबाड़ी केन्द्रों में दिए जाने वाले टेक-होम राशन की सूची में संशोधन कर कोदा (मंडुवा) और झंगोरा के साथ ही गहथ और काला भट जैसी स्थानीय दालों को अनिवार्य कर दिया है। यही आदेश अब योजना के संचालन में गले की फांस बन रहा है। तमाम प्रयासों के बावजूद समूह पर्याप्त मात्र में इन उत्पादों का इंतजाम नहीं कर पा रहे। कभी उत्तर प्रदेश का अंग रहे इस हिमाचली राज्य को बनाने के लिए शुरू हुए जनान्दोलनों में 'कोदा झंगोरा खाएंगे, उत्तराखण्ड बनाएंगे' का नारा जन जन की जुबान पर था। राज्य गठन का वह स्वप्न तो साकार हुआ ही, कोदा, झंगोरा को राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तरराष्ट्रीय पहचान भी मिल गई। प्रधानमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट नमामि गंगे में गंगा विचार मंच के प्रान्त संयोजक ने अपने एक यात्रा वृत्तान्त का जिक्र करते हुए बताया कि उन्होंने हाल ही में उत्तरकाशी से देहरादून जाते समय चिन्यालीसौड़, कुमराड़ा मार्ग पर छोटे से स्टेशन नागथली मणि में एक दुकान पर चाय पीने रुके। वहाँ मिठाई के काउण्टर पर सजी मिठाइयों पर उनके नाम के बोर्ड लगे थे। वह उन पर लिखे नामों जैसे कोदा की बर्फी, झंगोरा की बर्फी, लौकी की बर्फी, चुकन्दर की बर्फी के साइन बोर्ड देखकर हतप्रभ रह गए। बताते हैं कि इस दुकान में इन्ही मोटे अनाज से बनी मिठाइयों से सजी थी। लोग भी आ रहे थे और इन मोटे अनाज से बनी मिठाइयों को खरीद भी रहे थे और मौके पर बड़े चाव से लोग खा भी रहे थे। वह इन मोटे अनाज से बनी मिठाई के बारे में दुकान के मालिक समाजसेवी बिष्ट ने कोतवाल के हवाले से बताया कि कोरोनाकाल में जब उनकी दुकान बन्द हो गई, तब उन्होंने विचार किया कि आज तक पहाड़ के लोग मोटे अनाज को केवल भोजन के रूप में खाने तक ही सीमित हैं। क्यों न इसकी मिठाई बनाई जाए। उन्होंने प्रयोग के तौर पर पहले घर और गाँव में ही मोटे अनाज की मिठाई बनाकर लोगों को खिलाई। लोगों को पसन्द आने और अच्छा प्रोत्साहन मिलने पर उन्होंने लाकडाउन खत्म होने पर अपनी मिठाई की दुकान में मोटे अनाज की मिठाई बनाकर बेचना शुरू कर दिया। कोतवाल ने साफगोई से बताया कि मिलेटस यानी कोदा, झंगोरा, मंडुवा की बर्फी बनाने का कोई अलग फार्मूला नहीं है। दूसरी मिठाइयों की तरह ही इसको बनाया जाता है। यह पूरी तरह रसायनमुक्त यानी कैमिकल फ्री होती है। यह अलग बात है कि चीनी में यदि कोई रासायन होगा तो वह इसमें भी होगा। उनके अनुसार, शुद्ध देसी घी से बनी मोटे अनाज की मिठाई की कीमत बढ़ जाती है। आर्डर मिलने पर देशी घी की मिठाई भी बनाई जाती है। देश भर में आयोजित हो रही जी-20 की बैठकों में भी आजकल उत्तराखण्ड के मोटे अनाज को भोजन में विशेष रूप से अतिथियों के लिए परोसा जा रहा है। ऐसे में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इस नए प्रयोग को एक नया मुकाम मिल सकेगा। उल्लेखनीय है कि उत्तराखएड में झंगोरा को सामान्य चावल की तरह खाने की रिवाज था। बाद में इसकी खीर लोकप्रिय और प्रचलित हो गई। झंगोरा की खीर गाँव की थाली से होकर बाजार के होटलों से होते हुए फाइव स्टार तक पहुँच गई। शादी समारोह और पार्टियों में मोटे अनाज से बने खाद्य महत्वपूर्ण डिश हो गए। कंडाली की सब्जी, कोदे की रोटी, गहत का गहतवाणी अथवा सूप, गहत का फाणू किसी भी समारोह में स्टेटस सिम्बल बन गया है। गरीब पहाड़ी ग्रामीण की थाली से मोटा अनाज आज प्रधानमंत्री की थाली तक जा पहुँचा। उल्लेखनीय है कि देश में ज्वार, बाजरा, रागी (मडुआ), जौ, कोदो, झंगोरा, कौणी, मार्शा, चीणा, सामा, बाजरा, सांवा, लघु धान्य या कुटकी, कांगनी और चीना फसलों को मोटे अनाज के तौर पर जाना जाता है। आदिकाल से पहाड़ में मोटे अनाज की भरमार हुआ करती थी। लेकिन तब मोटे अनाज को खाने वालों को दूसरे दर्जे का समझा जाता था। उस समय मोटे अनाज की उपयोगिता और इसके गुणों से लोग ज्यादा विज्ञ नहीं थे। जानकारी का भी अभाव था। समय के साथ-साथ मोटे अनाज की पैदावार भी कम होने लगी, क्योंकि लोगों ने मोटे अनाज की जगह दूसरी फसलों को तवज्जो देना शुरू कर दिया और समाज की धारणा के अनुसार लोग चावल धान की फसल की ओर बढ़ गए। समय फिर लौट के आया और स्वस्थ स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज के भरपूर गुणों से लोग परिचित हुए। सेहत के लिए सभी तरह से फायदेमंद होने व लाइलाज बीमारी के इलाज में मोटे अनाज का सेवन रामबाण साबित होता है। इसलिए फिर से बाजार में इस पहाड़ी मोटे अनाज की भारी मांग होने लगी है। बाजार में मोटे अनाज की डिमाण्ड मांग ज्यादा होने लगी तो मोटा अनाज फिर से खेतों में लौटने लगा। ग्रामीण भी मोटे अनाज की फसलों को उगाने में रुचि दिखाने लगे हैं। आज पहाड़ों के बाजार से मोटा अनाज प्राप्त करना भी अपने आप में एक चमत्कार है। बाजार में मोटा अनाज कम और मांग ज्यादा है। खाद्यान्न के क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता हमारी आहार सम्बन्धी चुनौतियों से निपटने का पहला पड़ाव थी। इसमें कोई संशय नहीं है कि विगत सादे आठ वर्षों में हमने प्रधानमंत्री के नेतृत्व और मार्गदर्शन में भारत सरकार, किसानों एवं कृषि विज्ञानियों के प्रभावी प्रयासों के बल पर अनाज उत्पादन में अधिशेष यानी सरप्लस की स्थिति हासिल की है। आज हमारे अनाज भण्डार भरे पड़े हैं। इस बीच हमने अपनी दूसरी आहार सम्बन्धी चुनौती पर भी विजय प्राप्ति की दिशा में कार्य आरम्भ कर दिया है। यह दूसरी आहार चुनौती प्रत्येक भारतवासी की थाली में पर्याप्त पोषण से युक्त आहार पहुँचाने से जुड़ी है। समय के साथ यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपनी आहार सम्बन्धी आदतों में बदलाव करें। कार्बोहाइड्रेड से ज्यादा ध्यान प्रोटीन, खनिज तत्वों, विटामिंस और फाइबर पर केन्द्रित करने की जरूरत है। बदलती जीवनशैली में स्वस्थ शरीर के लिए आहार में मिलेट्स को जोड़ना आवश्यक एवं अपरिहार्य हो गया है। भोजन में मोटे अनाज का उपयोग शरीर को स्वस्थ्य रखने का अच्छा विकल्प साबित हो सकता है। देश के कोने-कोने में उपलब्ध खाद्य पदार्थों के हिसाब से ही खाना बनाया जाता है।जिसमें बर्तन में खाना बनाने से लेकर स्वादिष्ट खाना तैयार करना और उसको स्टोर करने के अलग-अलग तरीके हैं। इनमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन, मिनरल आदि की उपलब्धता अलग-अलग हो सकती है। पर शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए उन खाद्य पदार्थों का सेवन ठीक होता है जिनमें पोषक तत्वों की भरपूर उपलब्धता हो। पहाड़ की पुरानी खाद्य परम्परा में ऐसे ही खाद्य पदार्थों से तैयार भोजन का उपयोग कर शरीर को लम्बे समय तक फिट रखा जाता था।

दाल, चावल, रोटी, सब्जी के साथ ही अरसा, कंडाली का साग, फाणा, चेसा, कापली आदि का सेवन कर लोग बीमारियों से मुक्त रहते थे। पनचक्की में तैयार होने वाला आटा पेट की बीमारियों के लिए बहुत लाभप्रद है। पूर्व में लोग पनचक्की में तैयार होने वाले आटा का ही उपयोग करते थे। सिलबट्टे में पिसे मसाले भी शरीर को स्वस्थ्य रखने में कारगर साबित होते हैं। शरीर में खून की कमी को दूर करने के लिए लोहे के बर्तन में तैयार होने वाला खाना लाभप्रद होता है। कांसा, तांबा व भडू में धीमी आंच में भोजन तैयार करना पहाड़ की पुरानी परम्परा रही है। क्योंकि ये बर्तन मिनरल के भी स्रोत हैं। माइक्रो व मैक्रो मिनरल शरीर में पाचन व मेटाबॉल्जिम क्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कि वर्तमान में बाजार में बिकने वाला दूध व दूध से तैयार होने वाले अन्य उत्पाद भी मिलावटी हैं। इनका सेवन शरीर के अंगों को नुकसान पहुँचा सकता है। जबकि ग्रामीण क्षेत्रें में मिलने वाला शुद्ध दूध, मट्ठा व पल्तर विटामिन, मिनरल आदि की आपूर्ति शरीर को भरपूर मात्रा में करते हैं। यह इसलिए भी कि वहाँ पर जानवर को दूषित चारा के बजाय प्राकृतिक चारा खिलाया जाता है। मोटा अनाज कोदा, झंगोरा, चौंसी, लाई, राई, चौलाई आदि शुगर के मरीजों के लिए वरदान है। खाद्य पदार्थों में मिलावट को रोकने के लिए सख्त कानून बनाने और भोजन में मोटे अनाजों का अधिकाधिक उपयोग करने से कई तरह की बीमारियों से बचने के साथ ही शरीर को लम्बे समय तक स्वस्थ्य रखा जा सकता है। सेहत के लिए सभी तरह से फायदेमंद होने व लाइलाज बीमारी के इलाज में मोटे अनाज का सेवन रामबाण साबित होता है। इसलिए फिर से बाजार में इस पहाड़ी मोटे अनाज की भारी मांग होने लगी है। बाजार में मोटे अनाज की डिमाण्ड मांग ज्यादा होने लगी तो मोटा अनाज फिर से खेतों में लौटने लगा। ग्रामीण भी मोटे अनाज की फसलों को उगाने में रुचि दिखाने लगे हैं। आज पहाड़ों के बाजार से मोटा अनाज प्राप्त करना भी अपनेआप में एक चमत्कार है। बाजार में मोटा अनाज कम और मांग ज्यादा है।

ज्योतिष की बातें - 124

2 मई 2023 को शुक्र मित्रराशि मिथुन में प्रवेश करेगा। शुक्र पर कोई पापदृष्टि भी नहीं होगी और इस समय शुक्र मार्गी भी है, उदित भी। अतः शुक्र अत्यन्त शुभ हो रहा है। फलदीपिका के अनुसार शुक्र छठवें, सातवें और दसवें स्थान के अतिरिक्त अन्य सभी स्थानों पर शुभ फल प्रदान करता है। अतः अगले 28 दिन शुक्र भौतिक सुख, प्रेम प्रकरण, काव्य रचना, स्वास्थ्य आदि अपने कारक विषयों में मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, कुम्भ व मीन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य तीन राशियों के लिए भी सामान्य फलदायक होगा। यह गोचरफल केवल शुक्र के आधार पर लिखा गया है।

नरसिंह चतुर्दशी- वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी सूर्यास्त को स्पर्श करने वाली तिथि में, तदनुसार गुरुवार 4 मई को नरसिंह जयन्ती मनाई जाएगी। दशावतार में भगवान नरसिंह को भगवान विष्णु का चौथा अवतार माना जाता है।

कूर्म जयन्ती- वैशाख शुक्ल पूर्णिमा सायंव्यापिनी तिथि में, तदनुसार शुक्रवार 5 मई 2023 को कूर्म जयन्ती मनाई जाएगी। दशावतार में कूर्मावतार को भगवान विष्णु का दूसरा अवतार माना जाता है ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 15

इलेक्ट्रिक सप्लाई २२० अथवा ११० वोल्ट

इस स्तम्भ के अन्तर्गत मैं अपना स्वयं का विचार प्रस्तुत करता हूँ। ये विचार किसी दूसरे के विचार पर निर्भर नहीं होते हैं। मेरे इन विचारों से समाचार पत्र के सम्पादक अथवा अन्य किसी पाठक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। लेकिन जो भी व्यक्ति इन विचारों से सहमत होते हैं उन्हें मेरे इन विचारों का प्रचार प्रसार करना चाहिए ।

मैंने एक बार प्रत्यक्ष देखा कि अल्मोड़ा बाजार में एक बन्दर बिजली के तारों से छूकर नीचे जमीन पर गिर पड़ा और तड़प तड़प कर तुरन्त मर गया। ऐसी घटनाएँ बहुत होती रहती हैं। पशु पक्षी मनुष्य के अहंकार के कारण अक्सर बिजली के करंट से मरते रहते हैं। यह वास्तव में जीवों को धोखा देकर मारना ही है। कभी-कभी तो बिजली विभाग के कर्मचारी भी बिजली के तारों पर कार्य करते करते भूल-चूक से दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं। घरों में भी आम आदमी को बिजली के करंट से बचने के लिए निरन्तर धयान देना पड़ता है। जरा सी चूक जान पर भारी पड़ जाती है। ऐसी स्थिति में आवासीय विद्युत वितरण का जो 220 वोल्टेज है उस पर पुनर्विचार करना चाहिए जिससे कि प्राणों की हानि को कम किया जा सके। ध्यान देने योग्य यह भी है कि आजकल की बहु प्रचलित वस्तुएँ मोबाइल 3.7 वोल्ट, एलईडी बल्ब 1.8 से 3.8 वोल्ट, लैपटॉप 19 वोल्ट पर कार्य करते हैं। जब बहुत से विकासशील देशों जैसे यूएसए में 120 वोल्ट, कनाडा में 110 वोल्ट और जापान में 100 वोल्ट पर आवासीय बिजली सप्लाई हो सकती है तो अपने देश में ऐसा क्यों नहीं हो सकता!

-सरल

फ्लाईओवर बनेगा और अतिक्रमण हटेगा

हल्द्वानी। शहर में फ्लाईओवर बनने तय हैं, इसके लिये सर्वे कार्य पूरा हो चुका है। हाईकोर्ट के निर्देशों के बाद डीएम ने सर्वे को कहा था। शहर में दस जगहों पर सर्वे किया गया है। लोनिवि ने नैनीताल रोड, रामपुर रोड, कालाढूंगी रोड, कुसुमखेड़ा व लामाचौड़ में फ्लाईओवर की सम्भावनाएं तलाशी गई हैं। बताया जा रहा है कि अगस्त माह तक पता चल सकेगा कि किन स्थानों पर फ्लाईओवर बनेंगे और इसके लिये कितना अतिक्रमण हटेगा। बताते चलें कि गुरुग्राम की होलटैक कम्पनी को सर्वे कार्य पर लगाया गया था। जिसे कम्पनी ने 15 फरवरी 2023 से शुरु कर दिया था। कम्पनी की रिपोर्ट के आधार पर तय किया जायेगा कि हल्द्वानी शहर में किस स्थान पर फ्लाईओवर बनेगा। शहर के कालाढूंगी चौराहे, मुखानी चौराहे, मंगल पड़ाव चौराहे पर जबर्दस्त जाम से दिक्कत होती है, इससे उपाय जरूरी हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्कूलों की मनमर्जी पर कुछ होना भी या चलाचली

स्कूलों में निजी प्रकाशकों की महंगी किताब लगाने के मामले में २० ने दिये जवाब

हल्द्वानी। निजी स्कूलों में शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार पुस्तकें न लगाकर की जा रही मनमर्जी पर अभी तक भी प्रदेश भर में प्रदर्शन हो रहे हैं। महंगी किताबें, ड्रेस व अनाप-सनाप फीस से परेशान अभिभावकों ने कई स्कूलों में जाकर प्रदर्शन किया है। शिक्षा विभाग के डण्डे के बाद कई स्कूलों ने फिलहाल सादगी दिखानी शुरु कर दी है।

हल्द्वानी व आसपास के स्कूलों में भी ताबड़तोड़ छापेमारी में महंगी पुस्तकों को लगाये जाने के मामले प्रकाश में आए। जिस पर 54 विद्यालयों को नोटिस दिया गया था। बताया जा रहा है कि अपने बचाव के लिये 20 स्कूलों ने नोटिस का जवाब दिया है शेष 34 स्कूलों पर कार्रवाई की तलवार लटकी है। अब सवाल यह है कि स्कूलों की मनमर्जी पर कुछ होना भी है या चलाचली का खेला होगा। देखने में आया है कि कतिपय स्कूलों द्वारा शिक्षा के नाम पर लूट मचाई जा रही है। अपने धन्धे के लिये वह बात-व्यवहार सब भूल चुके हैं और अभिभावकों की मजबूरी का फायदा लेते रहे हैं। माता-पिता इनके आगे अपने बच्चों के लिये लुटने को मजबूर हो जाते हैं। सरकार द्वारा एनसीआरटी की पुस्तकों को लागू करने के बाद भी निजी प्रकाशकों के साथ मिलकर स्कूलों ने दुगुनी-तिगुनी कीमत की पुस्तकों को खरीदवाया है। इस बीच प्रदेश के सरकारी स्कूलों में एनसीईआरटी की पुनर्गठित पाठ्यक्रम की पुस्तकों से पढ़ाई के निर्देश दिये गये हैं। सत्र 2023-24 में हाईस्कूल-इण्टर के लिये पाठ्यक्रम पुनर्गठित किया गया है।

शासन-प्रशासन के निर्देश ठीक हैं, हाईस्कूल-इण्टर के लिये पुनर्गठित पाठ्यक्रम भी लागू हो जायेगा। लेकिन शिक्षा के नाम पर मची धींगामुस्ती का क्या होगा?

नए सिरे से तैयार होगा बैंड स्टैंड, रैमजे रोड की मांग

सरोवर नगरी का ऐतिहासिक बैंड स्टैंड का आधार कमजोर हो चुका है। मई में होगा कार्य

नैनीताल। सरोवर नगरी नैनीताल का ऐतिहासिक बैंड स्टैंड के पास नैनी झील की सुरक्षा दीवार के गिरने के बाद से भू-धंसाव हुआ है। ऐसे में इस स्टैंड को नये सिरे से तैयार करने की तैयारी है। शासन से 76 लाख की धनराशि स्वीकृत होने के साथ ही टेण्डर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। भूंधसाव रोकथाम के लिये मई माह में कार्य शुरु कर दिया जायेगा। ऐतिहासिक बैंड स्टैंड को बचाने के लिये होने वाले कार्य में पुराने ढांचे को ढहा कर नये सिरे से इसका निर्माण होगा।

बताते चलें कि पिछले वर्ष सितम्बर माह में बैंड स्टैंड के करीब दस मीटर की सुरक्षा दीवान झील में समा गई थी। ऐसे में यहाँ पर खतरा बना हुआ था। सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियन्ता ए.के.वर्मा के अनुसार टैण्डर प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है। मई माह में ट्रीटमेंट का कार्य शुरु किया जायेगा।

दूसरी ओर नगर पालिका सभासदों ने तल्लीताल बाजार व रैमजे रोड के नवीनीकरण कार्य को जल्द पूरा करने की मांग को लेकर डीएम को ज्ञापन सौंपा। इस पर डीएम धीराज गर्ब्याल ने जल्द काम पूरा किये जाने का आश्वासन दिया। बताते चलें कि डीएम के प्रयासों से नगर में नवीनीकरण कार्य चल रहा है जिसमें मल्लीताल बाजार मल्लीताल रिक्शा स्टैंड, तल्लीताल रिक्शा स्टैंड में कार्य पूरा हो चुका है परन्तु तल्लीताल बाजार व रैमजे रोड में अभी तक कार्य पूरा नहीं होने से सभासद व जनप्रतिनिधि नाराज हैं। ज्ञापन सौंपने वालों में सभासद प्रेमा अधिकारी, मोहन नेगी, भगवन रावत, कैलाश रौतेला, भाजपा मण्डल अध्यक्ष आनन्द बिष्ट, दयाकिशन पोखरिया, राहित भाटिया थे। साथी नारायण नगर सभासद भगवन सिंह रावत ने पॉलीटेक्निक-गैरीखेत क्षतिग्रस्त सड़क के पुनर्निर्माण के लिये ज्ञापन दिया

पुरानी पेंशन बहाली को लेकर कर्मचारियों ने खोला मोर्चा, प्रदर्शन-नारेबाजी

परिक्रमा

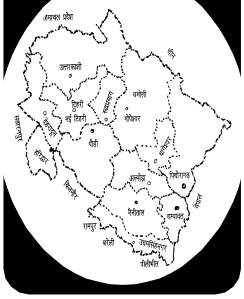

सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में कर्मचारियों व शिक्षकों ने पुरानी पेंशन बहाली को लेकर मोर्चा खोल रखा है। प्रदेश भर में जगह जगह धरना-प्रदर्शन हुए हैं। पुरानी पेंशन की मांग कर रहे कर्मचारियों ने कहा कि वह अपने भविष्य को लेकर चिन्तित हैं ऐसे में सरकार ने पुरानी पेंशन पर लागू करनी चाहिये जैसा की अन्य राज्य भी कर रहे हैं।

पेंशन बहाली को लेकर संयुक्त मोर्चा के पदाधिकारी मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से भी मिले और कर्मचारियों के मामले में निर्णय लेने का अनुरोध किया। इसके अलावा मंत्री, विधायकों व जिलाधिकारियों को भी ज्ञापन प्रेषित किये गये। कहा है यदि कर्मचारियों की नहीं सुनी गई तो अब सरकार के खिलाफ ही प्रदर्शन होगा।

देहरादून, हल्द्वानी, रुद्रपुर, पौड़ी से लेकर सभी जिला मुख्यालयों, तहसील मुख्यालयों तक कर्मचारियों ने जबर्दस्त जुलूस और प्रदर्शन करते हुए कहा है कि नई पेंशन से किसी भी कर्मचारी का भला नहीं होने वाला है। उन्हें सेवानिवृत्त होने के बाद घर चलाना मुश्किल हो जाएगा। अपनी इसी मांग को लेकर कर्मचारी संगठन मुखर हैं। राज्य के 80 हजार कर्मचारी प्रभावित हैं। यदि सरकार उनकी मांग नहीं मानती है तो लोकसभा चुनाव में खिलाफत होगी। पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) के लिये देहरादून में राष्ट्रीय आन्दोलन के घटक संगठन शिक्षा विभाग, राज्यकर विभाग, स्वास्थ्य विभाग, उत्तराखण्ड सचिवालय, उत्तराखण्ड विधानसभा, आइटीआइ कर्मचारी परेड ग्राउण्ड में एकत्रित हुए और शहीद स्मारक तक मार्च करते हुए सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। संगठन के प्रान्तीय अध्यक्ष जीतमणी पैन्यूली ने कहा कि सरकार को कर्मचारियों की ओर ध्यान देना चाहिये।

मुवानी में बड़े नेताओं के दौरे से हलचल

समाजसेवी शेर सिंह कार्की का स्मरण करते हुए सभागार का लोकार्पण किया सीएम ने

थल/मुवानी। स्थानीय समस्याओं को लेकर लम्बे समय से गुस्साए मुवानी में बड़े नेताओं के दौरे से हलचल है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी डीडीहाट विधायक विशन सिंह चुफाल, सांसद अजय टम्टा ने मुवानी में शेर सिंह कार्की सरस्वती विहार स्कूल के समारोह में भागीदारी की। अपनी सरकारी की नीतियों का उल्लेख करने के साथ ही इस क्षेत्र की समस्याओं को सुना। थल के के विभिन्न नागरिक संगठनों ने सीएम से भेंट करते हुए थल विकास खण्ड की मांग की। वरिष्ठ नागरिक कल्याण संगठन के अध्यक्ष कौस्तुभानन्द जोशी के नेतृत्व में मिले शिष्टमण्डल ने कहा कि क्षेत्र विकास से दूर है। इसलिये थल में विकासखण्ड खोला जाए। महिला डिग्री कालेज की मांग भी की गई।

उल्लेखनीय है कि मुवानी के लोग काफी समय से अपनी मांगों को लेकर सभी दलों के नेताओं से कहते रहे हैं लेकिन इनकी सुनवाई नहीं हुई। दूसरी ओर सर्वोदयी नेता शेर सिंह कार्की के नाम पर जिस बड़ी सम्पत्ति में महिला आश्रम सहित अन्य गतिविधियां जारी थीं उसे लेकर भी सवाल उठाये जा रहे थे। कहा जा रहा था कि इसका सदुपयोग बड़े स्तर पर किया जाए। अब सीएम दौरे बाद लग रहा है कि कुछ नया होगा। भगत सिंह कोश्यारी का विशेष लगाव इस जगह से रहा है और इसकी सुधबुध लेने के लिये वह तत्पर रहे हैं।

अब जब अवसर है तो मुवानी में शेर सिंह कार्की सरस्वती विहार स्कूल के भाऊराव देवरस सभागार का लोकार्पण के बाद सीएम ने महिला आश्रम और स्कूल के विकास के लिये 50 लाख रुपये देने की घोषणा की। भगतदा ने कहा नैनीताल से संचालित यह स्कूल सबसे आदर्श स्कूल बनाया जाएगा।

जाँच के परिणाम का आश में टनकपुर डिग्री कालेज

आपसी विवाद में प्रभावित हो रहा है उच्च शिक्षा का कार्य। आरोपों की बौछार है

टनकपुर। उत्तराखण्ड उच्चशिक्षा में टनकपुर महाविद्यालय का विवाद सबसे ज्यादा चर्चा में है। यहाँ शिक्षकों और प्राचार्य के बीच जिस प्रकार से मोर्चा खोला गया उसकी ताप शासन-प्रशान तक है। मुख्यमंत्री कार्यालय को भी विवाद के बारे में पूरा पता है। विवाद के कारण दूषित हो रहे वातावरण में कोई भी भद्र व्यक्ति कैसे कार्य कर सकता है?

कहने को टनकपुर शान्तप्रिय इलाका है और इसका महाविद्यालय भी धीमी रफ्तार आगे बढ़ता रहा है परन्तु पिछले सत्र से यहाँ उथल-पुथल होने लगी है। दरअसल कोरोना काल में यहाँ प्राचार्य श्रीमती जी.प्रकाश का निधन होने के बाद प्राचार्य का चार्ज बनबसा डिग्री कालेज की प्राचार्य डॉ.आभा शर्मा को दिया गया। साथ ही प्रशासनिक कार्य देख के लिये प्रो.एस.के.कटियार को कहा गया। डीडीओ पॉवर अन्यत्र होने से कालेज का प्रभावित होना स्वाभाविक है। फिर भी कालेज कार्यों में सरकता रहा। इसके बाद बाजपुर से प्रोन्नत होकर आये डॉ.नगेन्द्र द्विवेदी टनकपुर डिग्री कालेज के प्राचार्य बने। इनके आते ही स्वागत सत्कार हुआ और उम्मीद जगी थी कि महाविद्यालय विकास की गति पकड़ेगा परन्तु कुछ ही दिनों में कालेज का वातावरण धड़ेबाजी में बदल गया। प्राचार्य और शिक्षकों का एक गुट सीधे आमने-सामने हैं। यह लड़ाई शासन-प्रशासन के पास तक है। मामले को निपटाने के लिये उच्चशिक्षा निदेशक के साथ टीम आई और समझाया भी गया परन्तु विवाद सुलझने के बजाय और तेज हो गया। दोनों ओर से हाजिर-जबाब चलते रहे। अपने-अपने दावे और गवाह-सबूत जुटाए जाने लगे। सीएम कैम्प कार्यालय तक इस विवाद से भर चुका है। पूरे घटनाक्रम की जड़ में दीमक वाली स्थिति बनी हुई है। फिलहाल दोनों पक्ष इस उम्मीद में हैं कि कोई परिणाम जल्द आयेगा। देखना है आने वाले दिनों में क्या होगा। वर्तमान की स्थिति ठीक नहीं है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भैंसियाछाना में पहाड़ी दरकी

अल्मोड़ा। विकासखण्ड भैंसियाछाना में निर्माणाधीन जमराड़ी बैंड से बिलवाल गाँव को निर्माणाधीन तीन किमी लम्बी सड़क पर पहाड़ी भरभराकर गिर गई। इससे गाँवों का सम्पर्क टूट गया है। असल में इस मार्ग की सुविधा उपलब्ध होने से कई ग्रामों को लाभ हो सकता है लेकिन पहाड़ी दरकने से फिलहाल दिक्कत हो रही है।

व्यास घाटी में केन्द्रीय मंत्री का दौरा टला

धारचूला। केन्द्रीय उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल के व्यास घाटी दौरे से ग्रामीण उत्साहित थे लेकिन मंत्री का दौरा टल गया। इसके बाद गुंजी में आयोजित समारोह में सांसद अजय टम्टा ने 100 फीट ऊँचे तिरंगे को फहराते हुए लोकार्पण किया। डीएम रीना जोशी ने कहा कि क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जायेगा।

भिकियासैंण महोत्सव भी हुआ

रानीखेत। दो दिवसीय भिकियासैंण महोत्सव भी नृत्यगीत के साथ सम्पन्न हो गया। इसका शुभारम्भ रानीखेत विधायक प्रमोद नैनवाल ने किया। विशिष्ट अतिथि सल्ट विधायक के सुपुत्र करन जीना और भाजपा जिलाध्यक्ष लीला बिष्ट थे। रा. इण्टर कालेज के मैदान में स्थानीय कलाकारों व आमंत्रित कलाकारों ने मंचीय प्रस्तुतियां दीं।

आदिबदरी में नौठा कौथीग १३ मई से

कर्णप्रयाग। आदिबदरी में आगामी 13 से 15 मई तक नौठा कौथीग होगा। ग्रीष्म कालीन पर्यटन एवं विकास मेला समिति के अध्यक्ष जगदीश बहुगुणा की अध्यक्षता में आदिबदरी में मेला कमेटी की बैठक में नौठा कौथीग को भव्य रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया गया। महिला मंगल दलों को इसके लिये विशेष रूप आमंत्रित किया गया है।

बदरीनाथ में बाहरी लोगों का सत्यापन

गोपेश्वर। बदरीनाथ धाम में पुलिस ने बाहरी व्यक्तियों का सत्यापन अभियान चला रखा है। पुलिस अधीक्षक प्रमेन्द्र डोबाल के निर्देश पर चारधाम यात्रा के बेहतर संचालन के लिये बदरीनाथ धाम में बाहरी लोगों का सत्यापन जारी है। ऐसे लोगों के आवासों को भी चेक किया यगा है। अपील भी की है कि किसी भी अनजान या संदिग्ध को देखते ही पुलिस को सूचित करें।

शिकायत आने पर कार्यकारिणी भंग

हल्द्वानी। पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच हीरानगर की कार्यकारिणी की शिकायतें आने पर उसे भंग कर दिया गया है। संस्थापक अध्यक्ष बलवन्त सिंह चुफाल ने बैंक सम्बन्धी कार्यों पर भी प्रतिबन्ध लगाया।

सरकार! जोहार के गाँवों की ओर देखो

वाइब्रेन्ट गाँवों के अन्तर्गत नामित हों मिलम, टोला, बिल्जू, खिलांच

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति ने पीएम, सीएम से लेकर उच्चाधिकारियों को पत्र भेजते हुए सीमान्त के ग्रामों को विकास की ओर ले जाने के लिये वाइब्रेन्ट सूची में नामित करने की मांग की है। पत्र में जोहार घाटी की नई-पुरानी यादों का उल्लेख करते हुए बताया है कि भारत तिब्बत चीन सीना के नजदीक 14 राजस्व ग्राम जिसके अन्तर्गत रालम भी, जो जनजाति क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। यहाँ की भौगो-लिक परिस्थिति, लोक संस्कृति, वेशभूषा, खान पान, बोली भाषा से आज सभी परिचित हैं।

सन् 1962 भारत चीन युद्ध के बाद जो दयनीय स्थिति सीमान्त क्षेत्र के गाँवों की हो रही है वह भी जग जाहिर है। विकास की गति इन सीमान्त क्षेत्र के गाँवों होनी चाहिये थी वह ना के बराबर है। जैसा की आज भारत 75 वें अमृत महोत्सव को मना रहा है। सीमान्त क्षेत्र के लोगों ने भारत की आजादी से लेकर अनेक कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग दिया है। जैसा कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शहीद त्रिलोक सिंह पांगती, महान सर्वेयर पं. नैन सिंह रावत, सीआईई पं. किशन सिंह रावत रायबहादुर, पर्वतारोहण के क्षेत्र में स्व. हरीश चिन्द्र सिंह रावत, पद्मश्री स्व. हुक्कम सिंह पांगती, पद्मश्री स्व. लक्ष्मण सिंह जंगपांगी, पद्मश्री जो भारत-तिब्बत ट्रेड के सम तिब्बत ट्रेड अजेन्ट के रूप में नियुक्त थे। लवराज सिंह धर्मशक्तू सुरक्षा बल पद्मश्री, श्रीमती रीना कौशल धर्म शक्तू स्कीइंग अभियान में जिन्होंने विश्व में पहली महिला होने का गौरव प्राप्त किया व भारत का नाम रोशन किया। स्व. रामसिंह बाबू पांगती समाज सुधारक जोहार के युग पुरुष थे, स्व. नैन राम जी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, स्व. हरि सिंह जंगपांगी, स्व. त्रिलोक वृजवाल, स्व. जगत सिंह पांगती, स्व. हरीश चन्द्र सिं मर्तोलिया, स्व. दुर्गा सिंह रावत, स्व. भगवतानन्द जी, कैलाशानन्द जी स्वतंत्रता सेनानी, इसके अतिरिक्त अनेक सेनानी जिन्होंने ब्रिटिस सरकार के विरुद्ध आजादी का विगुल सर्वप्रथम जोहार घाटी से ही प्रारम्भ किया, उनका नारा यही था कि अंग्रेजो भारत छोड़ो, जो सन् 1940 से प्रारम्भ किया था।

पत्र में कहा है कि सीमान्त गाँवों में किसी प्रकार की योजनाएं लागू कर दी जाएं जिससे विकास की गति बढ़े और पलायन रुके। सीमान्त के ग्राम विकास वाइब्रेन्ट सूची में होंगे तो विकास की कुछ बूंदें इन दुर्गम भी होगी। इन ग्रामों में- मिलम, टोला, बिल्जू, खिलांच, मर्तोली, रालम, बुर्फू, रिलकोट, पांछू, गनघन हैं।

मल्ला जोहार विकास समिति के वार्षिक सम्मेलन की तैयारी

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति के वार्षिक सम्मेलन की तैयारी शुरु हो चुकी है। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने बताया कि वार्षिक सम्मेलन ज्योति देवेन्द्रा रावत मिलन केन्द्र मुनस्यारी में किया जायेगा। समिति की ओर से सभी से अनुरोध किया गया है कि अपने सुझाव व समस्याओं पर चर्चा के लिये अवश्य पधारें। सम्मेलन में मुख्य रूप से मल्ला जोहार के 13 सीमान्त जनजाति क्षेत्र के मकानों की दयनीय व खण्डहर होने से बचाव, भूस्वामियों के द्वारा अपनी जमीन चिन्हित करने के साथ ही अपने नाम दाखिल खारिज करने, चकबन्दी के विषय पर मन्थन होगा।

कोई उम्र नहीं होती

उमर की कोई उम्र नहीं होती
हँस कर गुजार दे
जिन्दगी के कछु पल
अपने लिए निकाल ले।
प्रकृति से तुम जुड़ा करो
सुबह की धूप से मिला करो
कुछ उसके संग बतियाओ तुम
कुछ उसकी सुनो कुछ अपनी
बतलाओ तुम
बातों-बातों में वक्त कट जायेगा
तुम्हें बड़ा आनन्द आयेगा।
मौसम की बारिश में भीगा करो
टप-टप बूँदों की ताल सुना करो
उसकी धुन में झूमा करो
तनमन भीग जायेगा
तुम्हें बड़ा आनन्द आयेगा।
खुले आकाश की छत पर
तारों की चादर ओढ़ सो जाओ तुम
तारों की मीठी-सी लोरी सुन
मीठे सपनों में खो जाओ तुम
सपनों का संसार बस जायेगा
तुम्हें बड़ा आनन्द आयेगा ।
उमर की कोई उम्र नहीं होती
हँस कर गुजार दे
जिन्दगी के कुछ पल अपने
लिए निकाल ले।
सागर से मिला-जुला करो
लहरों की ताल सुना करो
रेत के टीले बना
सीप-शंखो से बुना करो
बचपन फिर से लौट आयेगा
दिल का सकून मन भायेगा
तुम्हें बड़ा आनन्द आयेगा ।
पेड़ो से बातें किया करो
उन्हें अपने आगोश में
लिया करो
उनकी सौंधी-सी सुगन्ध
तुम में समा जायेगी
सुखद अनुभूति में मन
रच-बस जायेगा
जीवन का यथार्थ समझ
में आयेगा
तुम्हें बड़ा आनन्द आयेगा।
उमर की कोई उम्र नहीं होती
हँस कर गुजार दे
जिन्दगी के कुछ पल
अपने लिए निकाल ले।।

-रेनू कपूर

सराहनीय

डी.डी.पत की प्रतिमा का अनावरण

हल्द्वानी। जाने-माने वैज्ञानिक व कुमाऊँ विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति प्रोफेसर डी.डी.पन्त की प्रतिमा का अनावरण होना सुखद है। उत्तराखण्ड क्रान्ति दल के केन्द्रीय अध्यक्ष काशी सिंह ऐरी और मेयर जोगेन्द्र रौतेला ने डी.डी.पन्त पार्क में स्व. पन्त की प्रतिमा का अनावरण किया।

डी.डी.पन्त सामाजिक विचार मंच की ओर से आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने स्व. डी.डी.पन्त की शिक्षा और उत्तराखण्ड राज्य निर्माण में विशेष योगदान के लिये याद किया। डी.डी.पन्त ने 1979 में अलग राज्य की मांग के लिये उत्तराखण्ड क्रान्ति दल की स्थापना की थी। उस संघर्ष का परिणाम आज यह पृथक राज्य है। कार्यक्रम में खड़क सिंह बगड्वाल, प्रताप चौहान, दिनेश नौटियाल, हीरा सिंह बिष्ट, सुरेश जोशी, प्रकाश चन्द्र जोशी ने भी विचार रखे।

विक्टोरिया क्रॉस गजे घले की प्रतिमा लगेगी

हल्द्वानी। विक्टोरिया क्रॉस गजे घले की प्रतिमा शहर में लगेगी। फौज के अलावा सांस्कृतिक रूप से गजेघले ने सामाजिक चेतना का कार्य किया। ऐसे वीर का स्मरण गोरखा सेवा समिति की ओर से आयोजित समारोह में किया गया। यहाँ गोरखा स्मृति पार्क का उद्घाटन मेयर डॉ. जोगेन्द्र पाल सिंह रौतेला ने करते हुए गोरखाओं की बहादुरी की गाथा का वर्णन किया। उन्होंने समिति को आश्वासन दिया कि अगले दो माह के भीतर पार्क में विक्टोरिया क्रॉस विजेता कैप्टन गजे घले की प्रतिमा लगाई जाएगी। कैप्टन सुनील थापा की अध्यक्षता में हुए समारोह में समिति ने हल्द्वानी में रह रहे गोरखा परिवारों से सामने आने का आग्रह किया। संचालन पूर्व सैनिक भीम सिंह राणा ने किया। नरेन्द्र थापा, प्रताप बहादुर, किशन बिष्ट, दीवान सिंह थापा, राम सिंह छेत्री, आशा शाही ने विचार रखे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

ग्रीष्मकालीन पर्यटन, धार्मिक यात्रा सीजन में हार्दिक शुभकामनाएं-

प्रवेश आरम्भ.....

शारदा पब्लिक स्कूल

कैन्ट, अल्मोड़ा

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

सप्ताह के पर्व

बैशाख शुक्ल पक्ष
1 मई- मोहनी एकादशी
3 मई- प्रदोष व्रत
5 मई- बुद्ध पूर्णिमा
8 मई- संकष्टी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)